Class- BA(Hons.) Semester 6th

Paper: Theatre and Dramaturgy

Topic - भूमि शोधन एवं मापन

पूर्व कक्षाओं में हमने नाट्यगृह की विभिन्न प्रकार (विकृष्ठ, चतुरस्र, त्रयस्र) एवं उनके विभिन्न भेद (जेष्ठ, मध्यम, अवर)आदि का विस्तृत अध्ययन पंखे आकार एवं माप के आधार पर किया है। पुनः हम नाट्य मंडप के लिए अनिवार्य क्षेत्र अर्थात भूमि का शोधन एवं उसका मापन किस प्रकार किया जाए इस विषय का अध्ययन करेंगे।

नाटक और नाट्यगृह का घनिष्ठ संबंध है।नाट्यगृह के अभाव में नटवर्क द्वारा पूर्ण कुशलता से प्रदर्शित किया गया अभिनय भी प्रेक्षक वर्ग को आह्लादित करने में समर्थ नहीं होता। क्योंकि दर्शक उससे तादात में स्थापित नहीं कर पाते और ना ही वे नाटक द्वारा रसास्वादन की अनुभूति कर पाते हैं संभवतः इसी उद्देश्य से आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में नाट्यगृह के संदर्भ में विस्तृत एवं सूक्ष्म विवेचन किया है|

नाट्य मंडप के निर्माण हेतु सर्वप्रथम जो तत्व अनिवार्य है वह है भूमि अर्थात वह स्थान जिस पर नाट्य मंडप का निर्माण होना है। प्रेक्षा ग्रह की भूमि किस प्रकार की हो उसकी शुद्धि की का क्या प्रक्रिया है तथा उस भूमि का नाम मापन किस प्रकार से किया जाए इत्यादि विभिन्न विषयों का वर्णन आचार्य भरत के द्वारा नाट्यशास्त्र में किया गया है।

भूमि का चयन :

जिस भूमि पर प्रेक्षागृह का निर्माण करना है उसका चयन करते हुए यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह भूमि रेतीली, पथरीली, दलदली, कंकड़-कपाल-झाड़ी आदि से युक्त ना हो और ना ही उबड़-खाबड़ हो।जिस भूमि पर प्रेक्षागृह अपना ना हो वह समतल पक्की और कठिन हो।

भूमि का शोधन:

शोधन से अभिप्राय शुद्धि से है। जिस भूमि पर प्रेक्षागृह का निर्माण करना है उस भूमि का चयन करने के उपरांत नीव रखने से पूर्व उस का शोधन करके उसे साफ सुथरा एवं समतल कर लेना चाहिए।उस भूमि को जोतने के बाद उससे झाड़ निकालकर, हल चलवाकर उसमें से हड्डी, कील, खोपड़ी, घास, वृक्ष की ठूंठ और जड़े निकाल देनी चाहिए-

"प्रथमं शोधनं कृत्वा लांगलेन समुत्कर्षेत् ।

अस्थिं कीलकपालानि तृणगुल्माश्च शोधयेत्।।"

भूमि साफ होने के बाद यह ध्यान देना चाहिए कि उसकी मिट्टी सम्यक हो तथा उसका वर्णन लाल या गौर हो, वह भूमि स्थिर हो-

"समा स्थिरा तुकिण्ना कृष्णा गौरी च या भवेत्।

भूमिस्तत्रैव कर्तव्य: कर्तृभिर्नाट्यमण्डपान।।"

यह कार्य उत्तराभाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, विशाखा, रेवती, हस्त, पुष्य और अनुराधा नक्षत्र में करना चाहिए।इस प्रकार भूमि का पूर्णतया शोधन करने के पश्चात पुण्य नक्षत्र में श्वेत वर्ण की डोर से ध्यानपूर्वक भूमि मापन करना चाहिए।

"पुण्यनक्षत्रयोगेन शुक्लं सूत्रं प्रसारयेत्।"

यह डोर कपास मूंज की छाल फल कल की घास के द्वारा निर्मित की जाती है और इसका निर्माण बुद्धिमान एवं विद्वान द्वारा कराना चाहिए। यदि डोर कटी-टूटी हो तो अपशगुन माना जाता है । ऐसा माना जाता है कि यदि यह डोर चार भागों में टूट जाए तो सीधा प्रयोक्ता का नाश होता है।

`अर्धछिन्नै भवेत्सूत्रे स्वामित्वो मरणं ध्रुवं।

त्रिभागात्छिन्नाया राज्जवा राष्ट्रकोपो मापनं।।'

इसलिए भूमि को मापते समय प्रयोग की जाने वाली डोरी मजबूत होनी चाहिए। सूत्र के मध्य भाग से टूट जाने पर नाटक का स्वामी या राजा की मृत्यु सुनिश्चित होती है और यदि यह तीन भागों में छिन्न हो जाए तो राष्ट्र विप्लव माना जाता है।नाप लेते समय यदि डोरी हाथ से छूट जाए तो कुछ ना कुछ उपद्रव होता है। इसलिए अनुकूल मुहूर्त, तिथि और करण को देखकर, ब्राह्मणों को तृप्त करके, उनसे पुण्य आह्वान करना कर सावधानी से डोरी लगाकर भूमि नापनी चाहिए।

इस प्रकार नाट्य मंडप के निर्माण के समय इन दोनों बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यह ही नाट्यमण्डप निर्माण की दिशा में प्रथम सोपान है। अतः इसमें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

Link For Information
https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://ganeshmishra.com/%25E0%25A4%25AA%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25B0%25E0%25A5%2587%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25B7%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%2597%25E0%25A5%2583%25E0%25A4%25B9-%25E0%25A4%25B5%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B8%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25A4%25E0%25A5%2581/&ved=2ahUKEwjuxojagKnoAhXH8HMBHUwGAvUQFjAQegQIAhAB&usg=AOvVaw1Bac6l__xl2qu5bUCjZUn6&cshid=1584719428522

Lecture by Ritu Mishra

Department of Sanskrit